साहित्य अकादमी ने राष्ट्रपति भवन में साहित्य मिलनी का आयोजन किया

साहित्यक सम्मेलन के दौरान संबोधित कर रहे राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू।

नई दिल्ली, 30 मई (मिसरदीप भाटिया) : साहित्य अकादमी तथा राष्ट्रपति भवन सभ्याचारक केंद्र के संयुक्त प्रबंध अधीन 'कितना बदल चुका है साहित्य?' विषय पर दो दिवसीय साहित्यक सम्मेलन का उद्घाटन राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मु ने राष्ट्रपति भवन सभ्याचारक केंद्र, नई दिल्ली में किया। उन्होंने अपने उद्घाटनी भाषण में कहा कि 140 करोड़ देशवासियों के हमारे परिवार में बहुत सारी भाषाएं तथा अनगिणत बोलियां हैं तथा साहित्यक परम्पराओं की अनंत विभिन्नता है। पर इस विभिन्नता में भारतीयता की धड़कन महसूस होती है। भारतीयता की यही भावना हमारे देश की सामूहिक चेतना में रची हुई है। मैं मानती हूं कि सभी भाषाओं में लिखा साहित्य मेरा ही साहित्य है। उन्होंने गोपबंधू दास, राबिंदर नाथ ठाकुर, फकीर मोहन सैनापति, गंगाधर मेहर, प्रतिभा राय आदि का जिक्र करते हुए कहा कि आज का साहित्य उपदेशात्मक नहीं हो सकता। साहित्य से प्रेरणा लेकर मनुष्य सपने देखता है तथा उनको साकार करता है। इस मौके पर भारत सरकार के सभ्याचारक मंत्री राजिंदर सिंह शेखावत जो इस मौके पर विशेष मेहमान थे, ने कहा कि साहित्य समाज का, समाज की भावनाओं तथा समाज की स्थितियों का दर्पण है। उद्घाटनी सैशन के बाद सीधा दिल में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध उर्दु कवि शीन काफ निजाम ने की तथा साहित्य अकादमी के प्रधान माधव कोशिक इस सैशन में विशेष मेहमान थे।